ISSN : 2454-2121

सदीनामा

सोच में इज़ाफे की पत्रिका

वर्ष-18 ❐ अंक-1 ❐ 1 से 30 अक्टूबर, 2017 ❐ पृष्ठ-16+4 ❐ R.N.I. No. WBHIN/2000/1974 ❐ मूल्य-5.00 रुपए

तकनीकी विकास तनी एहरो देखी : ई त सचमुच पगला गया है

राजनीतिक विकास का पागलपन देखना या दिखाई देना सापेक्षिक है। राजनीतिक विकास अर्धपागलों को पागल लग सकता है, पागलों को सामान्य और सामान्य को अर्द्धपागल या ठीक इनके उलट! मगर यकीनी तौर पर एक बात तो कही ही जा सकती है – वह यह है कि तकनीकी विकास तो, सचमुच पागल हो गया है। सभी के लिए। पागलों के लिए भी, अर्द्ध पागलों के लिए भी और सामान्य के लिए भी।

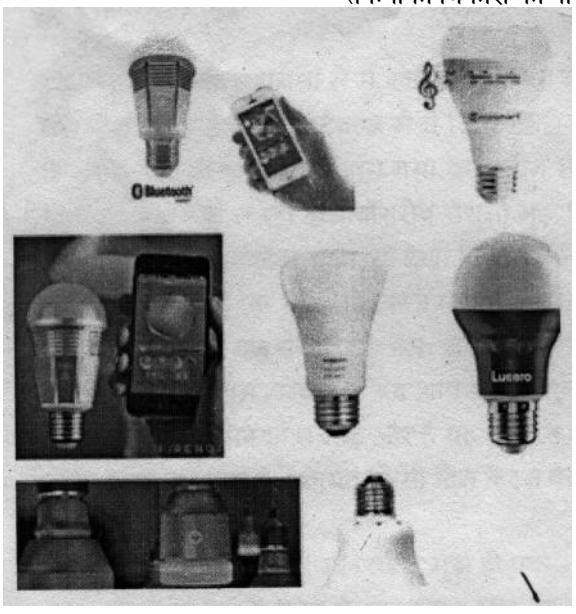

हमारे जैसे रचनाकारों को ही ले लीजिए। अच्छा भला हमलोग फाउंटनपेन से, डायरीनुमा कॉपियों में पांडुलिपि में लिखते थे। और जैसे-तैसे जुगाड़ आदि भिड़ा कर और यदि जेंडर न्यूट्रल की बात न करें तो अपनी रचना को संवारने के बजाय स्वयं को संवारकर लीप-पोतकर देख दिखा कर, मठाधीशों की लल्लो-चप्पो कर कहीं छप-छपा जाते थे और मर-खप जाते थे। मगर भला हो इस तकनीकी विकास का। फाउंटन पेन और डायरी का तो खैर, इन्तकाल होना ही था, किंडलादि के जमाने में, छपने-छपाने की प्रिंट की पत्रिकाओं और किताबों के दिन भी कब्र में लटके हुए हैं – और इधर सारा माल इंटरनेट पर जम कर इन्स्टैंट लिखा जा रहा है, जम कर पढ़ा जा रहा है और जम कर साझा किया जा रहा है और वायरल हो रहा है। हर आदमी लिख रहा है और हर आदमी पढ़ रहा है। रचनाकार-पाठक की महीन रेखा इस तकनीकी विकास के पागलपन ने खत्म सी कर दी हैं। हिन्दी-तकनीक की दुनिया में इस बीच तकनीकी विकास ने इतनी पागलपन भरी दौड़ मचाई कि लोग शुषा-कृतिदेव फॉन्ट अपनाते, इससे पहले यूनिकोड कूद पड़ा और लेखक- ब्लॉग, फेसबुक के पागलपन में उलझ कर रह गया।

तकनीकी विकास का पागलपन आदमी को कहीं का नहीं रख छोड़ेगा- मानव पूरी तरह समाप्त भले न कर पाए, मगर पागल बनाकर ही छोड़ेगा और मैं ये बात, कंप्यूटरों, मोबाइलों में आ रही कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बारे में नहीं कह रहा। मैं तो अपने घर में लगे, नए, स्मार्ट-बल्ब को जान समझकर अपना कर और अंततः फेंककर यह बात कर रहा हूँ. पिछली ऑनलानि खरीदी ऑफर में जाने किस पागलपन में मैंने एक अदद स्मार्च बल्ब खरीद लिया और उसे अपने शयनकक्ष में लगा लिया। यूँ, किसी भी किस्म की छूट और खरीदी ऑफर, आदमी को पागल बनाने के लिए होते हैं और उसे अपने शयनकक्ष में स्मार्टबल्ब के इंप्लांट होने की थी। शयनकक्ष में जहाँ दो दशक पहले तक मिट्टी तेल की डिबरी बमुश्किल जला करती थी, वहाँ तकनीकी विकास के पागलपन की वजह से मामला टंगस्टन फिलामेंट लैंप से चलकर ट्यूबलाइट और सीएफएल से होता हुआ, अब स्मार्टबल्ब तक आ गया है।

मेरे शयनकक्ष का यह स्मार्टबल्ब 1 करोड़ 60 लाख रंगों में

शेष पृष्ठ 18 पर

प्रथम विश्वयुद्ध के सौ साल भारतीय भागीदारी और इतिहास

प्रथम विश्वयुद्ध 1914 में शुरू हुआ और 1918 में समाप्त। इस युद्ध ने हर स्तर पर पिछली युद्धनीतियों को बदल डाला। यह युद्ध भारतीय संदर्भों में बहुत महत्वपूर्ण है। भारतीय सिपाहियों ने पहली बार नये तरह का युद्ध मैदान देखा जिसमें जमीन पर बर्फ, अदृश्य दुश्मन और नये तरीके के हथियारों का इस्तेमाल। इस युद्द को भारतीय साहित्य की अमर प्रेम कथा "उसने कहा था" के माध्यम से महसूस किया गया। इस युद्ध में घुड़सवार फौज की जरूरत करीब-करीब खत्म हो गयी। यूरोप के दो मोर्चों के एक पश्चिमी मोर्चे पर ये पल्टने लड़ी पर बहुत नुकसान हुआ। विश्वयुद्ध के तीसरे मोर्चे पर टर्की से युद्ध में इन घुड़सवार फौजों ने अपने जलवे दिखाये। इसराइल की मुक्ति के लिए लड़ा गया हाइफा का युद्ध उसमें एक है। जहाँ कुछ दिन पहले हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी फूल चढ़ाने गए थे।

इसी युद्ध में खाई खोदकर बैठे दुश्मनों से निपटने के लिए टैंक जैसे हथियार का ईजाद किया गया जिसने कई निर्णायक युद्ध जीते और आज हर देश इनके जखीरे इकट्ठे कर रहा था। हमारे देश के ऊपर कई बार टैंक का इस्तेमाल पाकिस्तान ने किया। इसी के संदर्भ में हम अब्दुल हमीद और फिल्म बार्डर के दृश्य में देखते हैं। आज यह हथियार अपनी कई कमियों के कारण बेहतर युद्धक हथियार के तौर पर प्रयोग नहीं हो रहा।

इस युद्ध में जहरीली गैस का प्रयोग किया गया पर कनाडा के फौजों ने गैस के प्रयोग का सामना करते हुए भी मोर्चों पर विजय पायी। यह युद्ध हमारे इतिहास हमारे पूर्वजों के लिए भी बड़ा महत्वपूर्ण है। इस युद्ध में शहीदों के लिए पूरे यूरोप में जगह-जगह छतरियां और कब्रे हैं।

अंग्रेजों ने अपनी पलटनों को बनाते समय यह ध्यान रखा कि किसी भी भारतीय को तोपखाने की जिम्मेदारी न दी जाये। 1857 के गदर का अनुभव उनको बहुत कुछ सीखा गया था। ब्रिटिश फौज का नाम रखा गया "रायल इम्पीरियल फोर्स" (इम्पीरियल सर्विस ट्रुप्स)। इस बात का ध्यान रखा गया कि किस तरह के सिपाहियों को क्या चाहिए। मसलन लड़ाकू कौमों कौन-कौन सी हैं? उनकी जरूरते क्या हैं? "सेल्फ प्रोइड" किस स्तर का है। इस युद्ध में इस फोर्स में मुसलमान, सिख, नेपाली, तिजंगे, मराठी तथा अन्य को उनकी विशिष्टताओं के आधार पर भरती किया गया जो बाद के वर्षों में उनके बहुत काम आये। इनके साथ ही देशी राजाओं की टुकड़ियाँ भी इस युद्ध में अंग्रेजों की ओर से लड़ने पहुँची, जिसमें सिख, राजपूत राजा थे। कुछेक युद्धों में इन देशी राजाओं ने नेतृत्व भी किया। इनमें उल्लेखनीय घुड़सवाल पलटने रहीं इस युद्ध में आधिकारिक तौर पर 74187 भारतीय सिपाही मारे गये। अनाधिक संख्या बहुत ज्यादा है। बहुत सारे स्वेच्छासेवक भी रहे। जिन युद्धों में वे लड़े उनके नाम हैं यप्रस की पहली लड़ाई, सोम्ने की लड़ाई, वजीरिस्तान की लड़ाई, मेसोपोटामिया मोर्चे पर लड़ाइयाँ। राजा महाराजाओं के यहाँ से कुल 50,000 सिपाही लड़े तथा कुल पचासेक राजा महाराजा लड़ते दिखे। घुड़सवार फौजों में जोधपुर इम्पीरियल सर्विस, मैसूर इम्पीरियल सर्विस, फर्स्ट हैदराबाद इम्पीरियल सर्विस लांसर्स, ये सभी फौजें मेसापोटामिया (इजिप्ट) मोर्चा पर लड़ी ब्रिगेडियर जनरल सिरिल रोडनी हार्बोर्ड के नेतृत्व में 15वीं घुड़सवार ब्रिगेड बनी। रेगिस्तान फ्रंट पर 5वीं घुड़सवार फौज जनरल एच. जे मैक्रडा के अधीन लड़ी जो मैगडिडो युद्ध तथा युद्ध के अन्त तक लिखते रहे। अफ्रीका मोर्चे पर लड़ाई की अधिकारिक समाप्ति बहुत बाद में हो पायी।

हमें भी अपने पुरखों के लिए सोचना चाहिए अपने-अपने स्तर पर अपने संदर्भों का प्रयोग करना होगा। चलते-चलते कि पहले विश्वयुद्ध में खिलाफत समाप्त हुई, तुर्की के खलीफा को हटाया गया इस खिलाफत को बहाल करने के लिए भारत में खिलाफत आन्दोलन हुआ जिसे कांग्रेस ने समर्थन दिया। यह आन्दोलन 1924 तक चला। आज सीरिया के आसपास आई एस संगठन जिसने कई देशों को तबाह कर रखा है। आज खिलाफत को दुबारा जिन्दा करना चाहता है हमें ऐसी घटनाओं से भी सीखना चाहिए।

जितेन्द्र जितांशु

काशीपुर में तिरंगा अगम काव्य संगम काव्य गोष्ठी सम्पन्न

तिरंगा अगम काव्य संगम की मासिक काव्य गोष्ठी आदर्श युवक संघ के संयुक्त तत्वावधान में काशीपुर स्थित "आयुस भवन" सभागार में जनाब दायम गव्वासी साहब की अध्यक्षता में हुई। इस अवसर पर श्री काली प्रसाद जायसवाल और सफीकुद्दीन सायाँ मुख्य अतिथि थे। गोष्ठी का संचालन राम प्रकाश सिंह ने किया। कविता पाठ करने वाले कवि एवं शायर सागर चौधरी, मो० चाँद, प्रवेश पटियालवी, पंकज कुमार शर्मा, जतिब हयाल, दिनेश चन्द्र प्रसाद 'दिनेश', शम्भूलाल जालान 'निराला' रामशिरोमणि उपाध्याय 'पथिक', रमाकान्त सिन्हा, रणजीत भारती, रामनारायण झा, सत्यप्रकाश दुबे, मो० नसीम अकबर, रामप्रकाश सिंह, इकलाब अकीब, चन्द्र किशोव चौधरी, प्रदीप कुमार धानुक, विश्वविजय कुमार चौबे, अशोक सिंह 'अकेला', आलम गोरखपुरी, रिजवान गोरखपुरी, अंत में संयोजक शम्भूलाल जालान 'निराला' ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

संपादक मण्डल

उप-संपादक : **तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य**

संपादकीय सलाहकार: **यदुनाथ सेउटा**

संपादक : **जितेन्द्र जितांशु**

विशेष सहयोग : **आरती चक्रवर्ती, एच० विश्ववाणी तथा राजेन्द्र कुमार रुईया (अमेरिका) सभी अवैतनिक हैं।**

पत्रिकाएं मिलीं :-

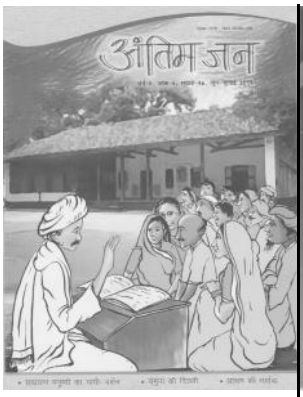

अंतिम जन
प्रधान सम्पादक : दीपंकर श्रीज्ञान
वर्ष-6, अंक-4, सं० 46
जून-जुलाई 2017
पृष्ठ संख्या - 64
गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति
राजघाट, नई दिल्ली-110002
Ph. 011-23392710

हिन्दुस्तानी ज़बान
सम्पादक : डॉ० मंजुला देसाई
वर्ष-49, अंक-2
अप्रैल-जून 2017, पृष्ठ सं.- 80
सम्पादकीय पता
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
7, नेताजी सुभाष रोड,मुम्बई-2.
Ph. 022-22812871

प्रकाशन प्रभार

राजेश्वर राय • मीनाक्षी सांगानेरिया
मारिया शमीम

पत्राचार का पता :

सम्पादक - सदीनामा
48/49A, Swiss Park, Kolkata-700 033
West Bengal. India ☎ : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

स्मरणांजलि

कौन थे मदनसूदन?

मदनसूदन जी पर सदीनामा ने अपना विशेषांक निकाला था। पिछले महीने हमलोगों ने अगम शर्मा पर एक लेख छापा था। पेंटर बलदेव पनेसर, अगम शर्मा और मदनसूदन कोलकाता के एक ही क्षेत्र में रहते थे। रेडियो स्टेशन के प्रीतम खन्ना, डॉ० वसुमति डागा, साहित्यकार नवल एवं नवल जोशी (साहित्यप्रेमी, गणगौर) उनके बहुत ही नजदीक लोगों में थे। कोलकाता एफ एम के शुरूआती दौर में भी उन्होंने काफी काम किया। यह लेख कोलकाता से प्रकाशित सन्मार्ग दैनिक के 8 अक्टूबर 2017 अंक में डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी (9830613313) ने लिखा था। अखबार और लेखक दोनों को बधाई देते हुये यह लेख साभार प्रकाशित किया जा रहा है। **– जितेन्द्र जितांशु**

'हर फ़िक्र को हंसी में उड़ा देने वाले मदनजी'

डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी
सुप्रसिद्ध साहित्यकार

कोलकाता के सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक क्षेत्र से जुड़ा व्यक्ति हो या पत्रकारिता और नाट्य-जगत से सम्बद्ध कोई पत्रकार-कलाकार; मदनसूदन जी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं रहा है। अपनी बहुआयामी सक्रियता, उदारहृदयता तथा सदाशयता से उन्होंने कोलकाता के हिन्दी-उर्दू भाषियों के बीच अपरिहार्य एवं महत्वपूर्ण स्थान बना लिया था। उनके अंतरंग वृत्त में आम से लेकर खास-सभी आते थे; उनकी प्रतिभा के प्रकाश से समाज का बड़ा दायरा आलोकित था। खुशमिज़ाज़ तथा फक्कड़ाना अंदाज वाले मदनजी आज अगर होते तो 13 अक्टूबर को 81 वर्ष पूर्ण कर 82 वें वर्ष में प्रवेश करते। खुशियां लुटानेवाले एवं सदा खुश रहने वाले मदनसूदनजी का देहावसान 28 अगस्त 2005 को 69 वर्ष की अवस्था में हुआ था। इन 12 वर्षों में उनकी अनुपस्थिति का अहसास स्नेही-सुहृदजनों को बार-बार हुआ है। वो अक्सर याद आते रहते हैं, सभी को प्रफुल्लित करने के अपने दुर्लभ स्वभाव के कारण। कोलकाता के युवा कवि रवि प्रताप सिंह का मुक्तक है–

जगत वाटिका छोड़ के सबको जाना है,
ज्योति जहां से मिली, वहीं पहुंचाना है।
अधरों पर मुस्कान खिलाये जो सबके,
उसी पथिक का अन्तिम सफर सुहाना है।।

अधरों पर मुस्कान खिलाने में माहिर थे मदनजी। उन्हें इस बात की सही प्रतीति थी कि अपने दर्द को दुनिया के सामने व्यक्त करने से कोई फायदा नहीं। रहीम का परामर्श उन्हें स्मरण था–

'रहिमन निज मन की व्यथा मन ही राखो गोय।/ सुनि अठिलइहैं लोग सब बांटि लैहें को।।

तभी तो चेहरे को ग़मगीन बनाकर हंसी का पात्र बनने के बजाय उन्होंने सभी के बीच उल्लास का उजास बांटने का बीड़ा उठाया था। वे अपनी मोहक उपस्थिति से परिवेश को जीवन्त बनाते रहे, हंसते-हंसाते रहे। लतीफों, चुटकुलों तथा हास्यपूर्ण प्रसंगों को अपने अनोखे अंदाज में प्रस्तुत कर बोझिल वातावरण को ठहाकों में रूपान्तरित कर देने की कला उनमें थी। कवि चिराग जैन रचित चार पंक्तियाँ याद आ गयीं –

गमों का दौर है आफ़त में जान है लेकिन
कुछ ऐसा रंग चढ़े रंग और हो जाए।
चलो कि फिर से फिज़ाओं में नूर आया है,
चलो कि फिर से ठहाकों का दौर हो जाए।

छोटे-बड़े, हमउम्र-सभी से घुलमिलकर आत्मीयता की डोर से बांध लेना मदनजी को बखूबी आता था। उनके मित्रों की सूची बहुत लंबी थी। इस फेहरिस्त में वृहत्तर कोलकाता के वरिष्ठ हिन्दी-उर्दू साहित्यकार तो थे ही, मदनजी के आत्मीय वृत्त के सहयोगी-सहकर्मी भी थे। प्रीतम खन्ना, सुश्री सुशीला गुप्ता, डॉ० बसुमति डागा, अनिल कुमार, नवल जोशी, वीणा किचलू, प्रभाकर चतुर्वेदी, अनीस रफी, जवा विश्वास, श्री प्रकाश, डॉ० नुसरत जहाँ के अतिरिक्त साहित्यकारों, पत्रकारों, कलाकारों का बड़ा समूह उनका प्रशंसक था जिनमें प्रमुख हैं – शायर नूर मुहम्मद नूर, कुशेश्वर, डॉ० उषा

द्विवेदी, डॉ० कमलेश जैन, कवि नवल, गीतेश शर्मा, सेराज खान बातिश, जगदीश उपाध्याय, राज मिठौलिया, डॉ० कृपाशंकर चौबे, मानिक बच्छावत आदि।

मेरे साथ मदनजी की आत्मीयता के ढेरों प्रसंग हैं, जिन्हें इस छोटे आलेख में समाहित करना कठिन है। उनकी स्मृति उन गल्प गोष्ठियों की याद दिला देती है, जो मदनजी की उपस्थित से जीवन्त हुआ करती थीं। कुमारसभा पुस्तकालय के कार्यक्रमों में उनकी अनिवार्य उपस्थिति तो होती ही थी, यदाकदा पुस्तकों के आदान-प्रदान के बहाने पुस्तकालय में भी वे अड्डा जमाया करते थे। डॉ० वसुमति डागा के पुराने आवास में ये बैठकें साहित्यिक मित्रों के संग-साथ के कारण ज्ञानवर्द्धक तथा रचनात्मक ऊर्जा प्रदान करने वाली होती थीं। इन साहित्यिक अड्डों का स्थायी भाव भले ही विनोदपूरित होता हो लेकिन उनमें मदनजी का हस्तक्षेप उनके विस्तृत अध्ययन तथा व्यापक जीवनानुभव को परिपुष्ट करने वाला होता था।

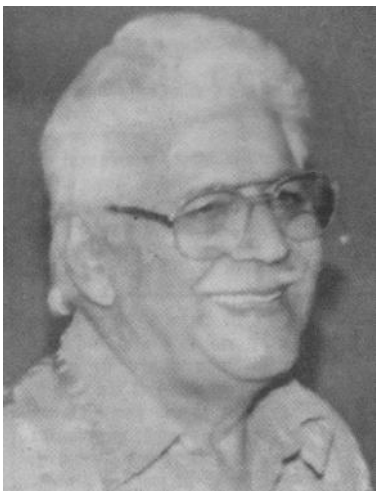

मदन सूदन जी का जन्म 13अक्टूबर 1936 को नवां शहर (नार्थ वेस्ट फ्रंटियर) में हुआ था। 1947 में मदन जी का परिवार आगरा आ गया, जहाँ उनकी शिक्षा-दीक्षा सम्पन्न हुई। उन्होंने राजनीति शास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। कॉलेज जीवन से ही मदनजी को नाटक में विशेष रुचि थी। जननाट्य संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेन्द्र रघुवंशी उन्हें गुरु के रूप में मिले, जिन्होंने मदनजी की नाट्य प्रतिभा का विकसित किया।

पिता के व्यवसाय में सहयोग प्रदान करने हेतु वे कलकत्ता आए लेकिन अभिनय एव नाटक के प्रति अनुराग के कारण उन्होंने स्वयं को कला एवं संस्कृति हेतु समर्पित कर दिया। 1966 में 'अदाकार' नाट्य संस्था से जुड़े तथा इसके सचिव के रूप में कई महत्वपूर्ण आयोजनों के परिकल्पक-प्रेरक रहे। परवर्ती वर्षों में इसी संस्था के तत्वावधान में नेताजी इण्डोर स्टेडियम में प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय कवि सम्मेलन' का सफल आयोजन मदनजी की संगठन कौशल को प्रमाणित करने वाला सिद्ध हुआ। नवल जोशी तथा मदनसूदन ने अपने सहयोगी-साथियों के साथ 'अदाकार' के बैनर तले कई अविस्मरणीय कार्यक्रम आयोजित किए। 'अपनी भाषा' संस्था के वे पदाधिकारी भी रहे।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से सम्बद्ध होकर मदनजी ने इनकी कई योजनाओं-परिकल्पनाओं को नयी गति प्रदान की। आकाशवाणी के हिन्दी-उर्दू विभाग के उद्घोषक; रेडियो-रूपक, रेडियो-नाटकों के लेखक, अनुवादक तथा रेडियो एफ.एम. के प्रस्तुतकर्ता के विभिन्न दायित्वों का उन्होंने बखूबी निर्वाह किया। 1976 में कलकत्ता दूरदर्शन से उनका सम्पर्क हुआ और अन्तिम समय तक वे इसके कार्यक्रमों से जुड़े रहे। दूरदर्शन कोलकाता के 'उर्दू-खबरें' कार्यक्रम के सहयोगी समाचार सम्पादक की जिम्मेदारी निभाते हुए उन्होंने अपनी छाप छोड़ी।

उन्होंने की फिल्मों, टेली फिल्मों तथा दूरदर्शन के धारावाहिकों में छोटी-बड़ी भूमिकाओं का निर्वाह कर अपने अभिनय से दर्शकों को विमुग्ध किया। देश के विभिन्न शहरों में 50 से अधिक नाटकों में मदनजी ने भागीदारी की। उन्होंने अनेक टेलीफिल्मों, नाटकों, दूरदर्शन के धारावाहिकों तथा रेडियो नाटकों की पटकथाओं तथा संवाद का लेखन भी किया। वे हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू भाषाओं के जानकार तो थे ही, इन भाषाओं में लेखन एवं अनुवाद में भी दक्ष थे। बांग्ला और पंजाबी भाषाओं पर भी उनका अधिकार था। उर्दू भाषा एवं साहित्य के साथ उच्चारण के प्रति भी वे अतिरिक्त सजग रहते थे। मंच संचालन के क्षेत्र में भी उनकी पर्याप्त ख्याति थी। किसी शायर की

कहाँ है मदनसूदन का साहित्यिक खजाना

स्व० मदनसूदन की संग्रहित सभी किताबें बहुत महत्वपूर्ण थीं। प्रमुख उद्घोषिका, आध्यात्मिक वक्ता एवं प्रोफेसर डॉ० वसुमति डॉगा एवं उनके परिवार ने इनको सदीनामा को दान दे दिया। उस दिन दुर्गापूजा की सप्तमी का दिन था। हमारे सम्पादक जितेन्द्र जितांशुजी ने कहा धरमतल्ला पहुँचो, मन नहीं कर रहा था पर गया। वहाँ से वे हमें मदनसूदनजी के घर ले गये जहाँ से हमलोगों ने उस संग्रह को नैहाटी (जिला उत्तर 24 परगना, प०.बं०) की गरीफा मैत्रेय ग्रंथागार (लाइब्रेरी) में पहुँचाया, जिसकी संचालिका डॉ० इन्दु सिंह हैं।

रवि साव, कार्यक्रम विभाग सदीनामा डॉट इन

जिन्दादिली की एक संस्था का नाम-मदनसूदन

जिन्दगी को जिन्दादिली और अपनी शर्तों पर जीने वाले इंसान का नाम है मदनसूदन। आकाशवाणी कोलकाता से जुड़े रहने के कारण उनके साथ गुजारे लम्हों में कोई भी लम्हा ऐसा नहीं है जिसे अलग किया जा सके, वैसे उनके जाने के बाद से एक दिन भी ऐसा नहीं गया कि बातचीत के दौरान उनके किस्से ना दोहराये गये हों। एक बेहतरीन कथाकार, ज्ञान का भंडार अदाकारी की एक संस्था का नाम है मदनसूदन। आज भी जब सोचता हूँ तो बस यही लगता है सब लोग आकाशवाणी की कैंटीन में बैठे हैं। चाय-कॉफी चल रही है महफिल में मदनजी के ठहाके गूंज रहे हैं। और वो इंसान आज फिर आखों के सामने आकर खड़ा हो गया है।

–अनिल कुमार, वरिष्ठ उद्घोषक आकाशवाणी कोलकाता

ये पंक्तियाँ उन्हें बहुत प्रिय थीं–

रौशनी हूं, न घर, न दर मेरा,
खत्म होता नहीं, सफर मेरा।
मैं किसी बज्म तक नहीं महदूद,
अंजुमन-अंजुमन गुजर मेरा।

सचमुच मदनजी किसी एक महफिल एक विधा या एक दायरे तक सीमित नहीं थे; उनके सोच की परिधि व्यापक थी, उनकी व्याप्ति सर्वत्र थी। 'सबकी खबर ले/सबको खबर दे'– स्लोगन को सार्थक करते हुए वे यत्र-तत्र विचरण करते रहते थे। उनके अंतरंग सखा तभी तो उन्हें 'नगर नारद' कहकर छेड़ते रहते थे मदनजी भी उसी मुद्रा में अपने नटखट बंधुओं को यथोचित प्रसंग सुनाकर जबाव देते रहते थे।

मदनजी ने सांध्य दैनिक 'लेकिन' का कई वर्षों तक सम्पादन भी किया। उनकी साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिरुचि पत्र में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती थी। मुझ जैसे लेखनी-भीरु से भी उन्होंने समीक्षाएं लिखवाकर ससम्मान प्रकाशित किया था। स्थानीय कवियों-साहित्यकारों की रचनाओं को इस पत्र में वे छापते रहते थे।

'सबके प्रिय सबके हितकारी' थे मदन जी। असंख्य साहित्यकारों-कलाकारों को उनकी योग्यता-क्षमता के आधार पर रेडियो-टी.वी. के आयोजनों में जोड़कर उन्होंने प्रतिभा को पुष्पित-पल्लवित-सम्मानित करने का उल्लेखनीय कार्य किया। अपनी अनुज पीढ़ी के प्रति उनका स्नेह-सद्भाव रेखांकित करने वाला होता था। व्यक्तिगत क्षति करते हुए भी दूसरों के कार्य के लिए समय एवं श्रम प्रदान करना उनका स्वभाव था, जो आज दुर्लभ होता जा रहा है।

मदनजी के संस्कार से संस्कारित, उनकी दीक्षा से दीक्षित अनेक लोगों ने अपने जीवन में उंचाइयाँ हासिल की हैं। उनके सान्निध्य से से बहुत कुछ सीखने का लाभ मुझे भी प्राप्त हुआ है।

आकाशवाणी-दूरदर्शन से मदनजी की संबद्धता आजीवन 'अस्थायी'(कैजुअल) ही रही, परन्तु कार्य के प्रति उनका समर्पण भाव किसी 'स्थायी' कर्मचारी-अधिकारी से कम नहीं रहा। यही कारण है कि इन दोनों महत्वपूर्ण संस्थानों को मदनजी की प्रतिभा, योग्यता और उनके व्यापक संपर्क का लाभ भरपूर मिला।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इस अर्थ प्रधान युग में अपनी सीमित आय के दायरे में रहकर घर परिवार की जिम्मेदारी का बोझ संभालना कितना कठिन होता है- इस दृष्टि से मदनजी आजीवन संघर्षरत रहे, परन्तु अपने स्वाभिमान को अडिग रखा, वे अपनी सारी गार्हस्थिक चिन्ताओं को हास-परिहास बिखेरते हुए भुलाते रहे। श्यामानन्द सरस्वती 'रोशन' की चार पंक्तियाँ हैं–

जिन्दगी फर्ज़ का तराना है
जो बहरहाल गुनगुनाना है।
फैसला कर लिया है हमने
कुछ भी हो जाय मुस्कुराना है।।

देश के एक महत्वपूर्ण राज्य की सरकार ने कुछ वर्ष पूर्व आनंद मंत्रालय का सृजनकर विविध क्षेत्रों में आनंद के प्रचार-प्रसार का संकल्प किया है। हमारे मदनसूदनजी ने आनन्द की इस भाव-धारा का प्रसार कोलकाता में बहुत पहले कर दिया था। उनके निधन से मानो इस प्रक्रिया पर विराम लग गया है। दुर्लभ हो गयी हैं मित्रों के बीच निष्कपट बातचीत, निश्छल छेड़छाड़ और उन्मुक्त हंसी। तभी तो मदनजी को याद करते हुए कह सकते हैं– 'अगर तलाश करूं कोई मिल भी जाएगा/ तुम्हारे साथ का लम्हा बहुत सताएगा।'

कोलकाता महानगर की सांस्कृतिक गतिविधियों में उनके व्यापक अवदान का स्मरण करते हुए मदनजी की तरफ से किसी शायर की चार पंक्तियां कही जा सकती हैं–

कुछ जिन्दगी के गीत सुनाए हैं बज़्म में,
कुछ फासले दिलों के मिटाए हैं बज़्म में।
माना कि हर किसी को उजाला न दे सके,
हमने भी कुछ चराग जलाए हैं बज़्ममें।।

विज्ञान व्रत की गजलें

एन - 138, सैक्टर - 25, नौएडा - 201301 (भारत)
मो० : 09810224571, E-mail : vigyanvrat@yahoo.com, vigyanvrat@gmail.com

ग़ज़ल

(एक)

खुद पर इक अहसान रहा हूँ
अपने घर मेहमान रहा हूँ

घर हो जाने की ख़्वाहिश में
बस घर का सामान रहा हूँ

तुमको पहले भी देखा है
हाँ कुछ-कुछ पहचान रहा हूँ

अक्सर उनके अफसानों का
मैं ही तो उन्वान रहा हूँ

आख़िर तक सहरा ही निकली
कब से दुनिया छान रहा हूँ

(दो)

दिल भी वो है धड़कन भी वो
चेहरा भी वो दरपन भी वो

जीवन तो वो पहले भी था
अब जीवन का दर्शन भी वो

आज़ादी की परिभाषा भी
जनम-जनम का बंधन भी वो

बिंदी की ख़ामोशी भी है
खन-खन करता कंगन भी वो

प्रश्नों का हल भी लगता है
और जटिल सी उलझन भी वो

(तीन)

जितने लोग शहर में हैं
एक मुसलसल डर में हैं

मंज़िल पीछे छूट गई
फिर भी लोग सफ़र में हैं

सिर्फ़ मेरे क़दमों के निशाँ
मेरी राह-गुज़र में हैं

उनसे उत्तर क्या पूछा
प्रश्न कई उत्तर में हैं

ख़ैर तो है विज्ञान मियाँ
काफ़ी दिन से घर में हैं

पत्रिकाएं मिलीं :-

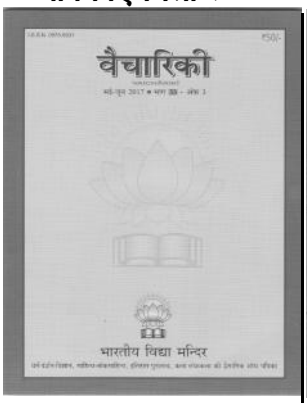

वैचारिकी
सम्पादक : डॉ० बाबूलाल शर्मा
भाग-33, अंक-3, मई-जून 2017
पृष्ठ संख्या - 94
भारतीय विद्या मंदिर
12/1, नेली सेनगुप्ता सरणी
कोलकाता-700 087
Ph. 033-22282155
e-mail : bvm.caichariki@gmail.com

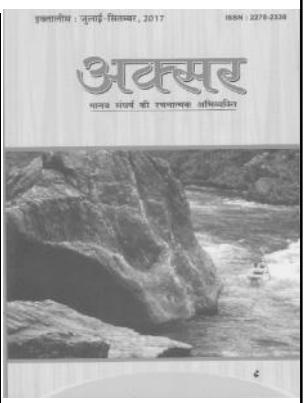

अक्सर
प्रधान सम्पादक : हेतु भारद्वाज
वर्ष-41, जुलाई-सितम्बर 2017,
पृष्ठ सं.- 144
सम्पादकीय पता
ए-243, त्रिवेणी नगर, गोपालपुरा
बाईपास, जयपुर-302 018
Ph. 0141-2760160
e-mail : aksar.tramasik@gmail.com

संगीत और सांप्रदायिक पूर्वाग्रह

पश्चिम के साथ साक्षात्कार की प्रक्रिया में उन्नीसवीं सदी में हिन्दुओं और मुसलमानों ने अपनी-अपनी अस्मिता को अपने "गौरवपूर्ण अतीत" के आलोक में समझने और परिभाषित करने का प्रयास किया और इस प्रक्रिया में स्वयं को न केवल सांस्कृतिक बल्कि एक राजनीतिक समुदाय के रूप में पुनर्गठित किया। सांप्रदायिकता इसी प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न विचारधारा है जिसकी बुनियाद अपने समुदाय के हितों को दूसरे समुदाय के हितों के खिलाफ समझने पर रखी गई है। जाहिर है कि इस क्रम में अपने समुदाय का गौरवगान करने और दूसरे समुदाय से नफरत करने की प्रवृत्ति का पैदा होना बहुत स्वाभाविक है।

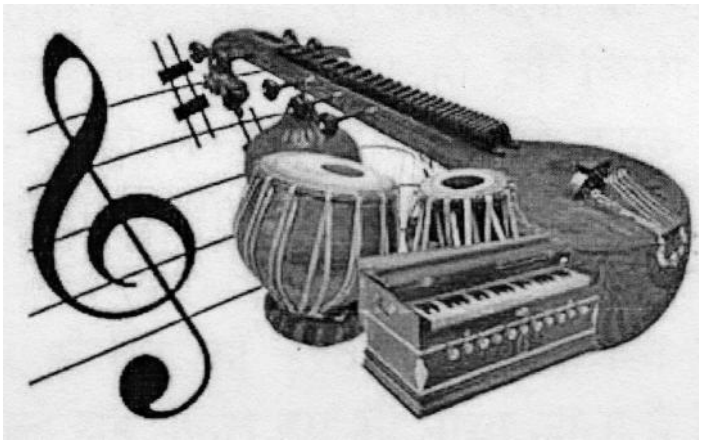

भारतीय उपमहाद्वीप का संगीत उसमें रहने वाले सभी निवासियों के योगदान से बना संगीत है जिस पर किसी एक समुदाय का एकाधिकार नहीं है। ऐतिहासिक कारणों से किसी एक समुदाय का अल्प या दीर्घ अवधि के लिए वर्चस्व स्थापित हो सकता है लेकिन एकाधिकार कभी भी स्थापित नहीं हो सकता, और यह वर्चस्व भी स्थायी नहीं होता क्योंकि दूसरा समुदाय स्थापित सत्ता-समीकरण को बदलने के लिए हमेशा सक्रिय रहता है। यदि इस सक्रियता के पीछे केवल बेहतर कलासृजन की प्रेरणा हो तो किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती। लेकिन यदि इसके पीछे शुद्ध सांप्रदायिक आग्रह हो तोसमस्या पैदा होती है।

संगीतकार संगीत को ईश्वर की आराधना बताते हैं। अक्सर उन्हें यह कहते हुए भी पाया जाता है कि संगीत उनके लिए ईश्वर तक पहुँचने का साधन है। नाद को ब्रह्म भी माना जाता है और कहा जाता है कि संगीत देश, काल, जाति धर्म और संप्रदाय सभी सीमाओं का अतिक्रमण करता है क्योंकि वह सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक है। संगीतकार का धर्म केवल संगीत है क्योंकि स्वरों का कोई धर्म नहीं होता। लेकिन यह आदर्श स्थिति का वर्णन है, वास्तविक स्थिति का नहीं। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर अब तक सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में जिस तरह सांप्रदायिकता की विषबेल फली-फूली है, इसके कारण देश का विभाजन करने वाली इस विचारधारा के जहरीले असर से संगीत भी अछूता नहीं रह सका है।

पुरानी पत्रिकाएँ उलटने-पलटने के क्रम में 'अकार' का एक अंक (अगस्त 2013 नवम्ब 2013) हाथ में आया जिसमें सैयद जुल्फिकार अली बुखारी की आत्मकथा 'सरगुजश्त' का एक अंश छपा है। सैयद जुल्फिकार अली बुखारी सैयद अहमद शाह बुखारी (उर्दू के मशहूर व्यंग्यकार पितरस बुखारी) के छोटे भाई थे और आजादी के पहले इन दोनों भाइयों का ऑल इंडिया रेडियो पर ऐसा वर्चस्व था कि उसे मज़ाक में बीबीसी (बुखारी ब्रदर्स कॉर्पोरेशन) कहने लगे ते। विभाजन के बाद जुल्फिकार बुखारी रेडियो पाकिस्तान में काफी समय तक काम करने के बाद उसके महानिदेशक भी बने। यह आत्मकथा उन्होंने पाकिस्तान में ही लिखी लेकिन इस अंश का संबंध 1930 के बाद के विभाजनपूर्व भारत से है।

बुखारी लिखते हैं : "अब इनको कौन बताए कि मद्रास को छोड़कर बाकी तमाम हिन्दुस्तान में अगर मौसिकी का इल्म है तो सिर्फ मुसलमानों को, मौसिकी हिन्दुओं के नजदीक भी नहीं गई। मैं ये बात किसी तअस्सुब (पूर्वाग्रह) की बिना पर नहीं कहता, इल्म के मामले में तअस्सुब कैसा ? हकीकत ये है कि हमारे हिन्दुस्तान में आने से कब्ल (पहले) यहाँ सिर्फ चार सुर रायज (प्रचलित) थे। मुसलमानों ने सातसुर यहाँ आकर रायज किए। ये तमाम मौसिकी

मुसलमानों की आवरदा (लाई हुई) है। मद्रास में इस मौसिकी को अरब लाए और शुमाली (उत्तरी) हिन्दुस्तान में ईरान के रास्ते से आने वाले मुसलमान।" विष्णु दिगंबर पलुस्कर – जिनके ओंकारनाथ ठाकुर, विनायकराव पटवर्धन, नारायणराव व्यास, डी.वी. पलुस्कर और बी.आर. देवधर जैसे यशस्वी शिष्य हुए- इसके बारे में बुखारी साहब के उद्गार कुछ यूं निकले हैं : "भाईजान मरहूम और मैं दोनों विष्णु दिगंबर के लाहौर वाले स्कूल में दाखिल हुए ताकि देखें तो सही कि ये लोग क्या करते हैं। मगर चंद ही दिनों में लाहौल पढ़कर बाहर आ गए। अब कौन बैठकर भजन गाता और वो भी बेसुरे उस्ताद की आवाज के साथ आवाज मिलाकर।"

पाकिस्तानी फिल्मों के मशहूर संगीत निर्देशक खुर्शीद अनवर ने वॉइस ऑफ अमेरिका की उर्दू सर्विस के प्रमुख ब्रायन सिल्वर को दिए एक इंटरव्यू में भी यही बात कही थी कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत मुसलमानों का है। कान्हड़ा का जिक्र आने पर उन्होंने कहा कि सभी तरह के कान्हड़े चाहे वह दरबारी कान्हड़ा हो या कौंसी कान्हड़ा या हुसैनी कान्हड़ा या नायकी कान्हड़ा – ये सभी मुसलमानों के ही बनाए हुए हैं। यूं सभी यह जानते हैं कि दरबारी कान्हड़ा, मियां की तोड़ी, मियां की सारंग, मियां मल्हार जैसे मशहूर राग तानसेन के बनाए हुए हैं जिनके बारे में अभी तक तय नहीं हो पाया है कि वे अपना धर्म छोड़कर मुसलमान बने ते या नहीं। आचार्य वृहस्पति जैसे प्रकांड विद्वान और संगीतशास्त्री का मत है कि तानसेन ने कभी इस्लाम स्वीकार नहीं किया क्योंकि समकालीन ऐतिहासिक दस्तावेजों में इस बात का कोई जिक्र नहीं है और इसका पहले-पहल उल्लेख अठारहवीं सदी में मिलता है।

संगीत जगत हिन्दू सांप्रदायिक भावनाओं और उद्देश्यों से अछूता रहा हो, ऐसा भी नहीं है। विष्णु दिगंबर पलुस्कर और विष्णु नारायण भातखंडे ने संगीत-शिक्षण की जो संस्थाएं खोलीं, उनके द्वारा काफी हद तक इनकी पूर्ति हुई। पलुस्कर के यशस्वी शिष्यों ने उनकी परंपरा को देशभर में फैलाया और आज एक लगभग वर्चस्व वाली स्थिति में हैं। लेकिन यह भी एक विचारणीय विषय है कि उनकी शिष्य परम्परा में एक भी ऐसा मुस्लिम संगीतकार क्यों नहीं है जो संगीत सम्मेलनों के मंचों पर नज़र आता हो। जबकि सच्चाई यह है कि अगर ग्वालियर घराने के संस्थापक हद्दू खां-हस्सू खां अपनी गायकी हिन्दू शिष्यों को न सिखाते तो विष्णु दिगंबर पलुस्कर का उदय ही न होता। शिक्षित हिन्दू मध्यवर्ग में संगीत के प्रचार के उद्देश्य से पलुस्कर ने तुलसीदास, सूरदास, मीरा और नानक जैसे संत कवियों की पंक्तियाँ लेकर उन्हें रागों में बांधा, भजन के अतिरिक्त संगीत के अन्य प्रकारों को त्याज्य माना और इस तरह इस धारणा को बल प्रदान किया कि भारतीय संगीत मुख्यत: धर्म से जुड़ा है और मुस्लिम शासकों के दौर में संगीतकारों और संगीत, दोनों के (चारित्रिक) स्तर में गिरावट आई।

सांप्रदायिक दृष्टि से संगीत को देखने के परिणामस्वरूप पाकिस्तान और भारत, दोनों में एक अजीब किस्म की कोशिश की गई और रागों के नाम बदले गए। सौभाग्य से यह कोशिश कामयाब नहीं हो सकी। पाकिस्तान में रामकली, दुर्गा, भैरव, शंकरा, श्याम कल्याण जैसे उन रागों के नाम बदलने की कोशिश हुई जिनमें हिन्दू देवी-देवताओं के नाम आते थे और बन्दिशों में भी ऐसे ही परिवर्तन किए गए लेकिन यह कोशिश विफल रही। भारत में ओंकारनाथ ठाकुर ने राग जौनपुरी को जीवनपुरी कहना शुरू किया जबकि यह सर्वमान्य तथ्य है कि इस राग की रचना जौनपुर के सुल्तान हुसैन शाह शर्की ने की थी। पुराने लोग अभी भी याद करते हैं कि ओंकारनाथ ठाकुर संगीत सम्मेलन के मंच को गंगाजल से शुद्ध करके और उस पर अपनी मृगछाला बिछाकर बैठने के बाद ही अपना गायन शुरू करते थे। इसी तरह यमन को केवल कल्याण कहने की परम्परा भी डाली जा रही है। लेकिन सौभाग्य से यह प्रयास भी परवान नहीं चढ़ पा रहा है।

विष्णु नारायण भातखंडे ने संगीत के हिन्दूकरण की कोशिश नहीं की, लेकिन उनका संस्कृत में लिखे गए प्राचीन संगीत ग्रन्थों पर जरूरत से ज्यादा जोर था। जानकी बाखले ने अपनी पुस्तक "टु मेन एंड म्यूजिक" में विस्तार से वर्णन किया है कि किस तरह वे मुस्लिम उस्तादों से संस्कृत ग्रन्थों के बारे में सवाल करते थे और यह सिद्ध करते थे कि उनकी गायकी का कोई प्रामाणिक सैद्धान्तिक आधार नहीं है। लेकिन इन्हीं उस्तादों की सहायता लेना उनकी मजबूरी थी और उनसे ही राग-चर्चा करके और बंदिशें एकत्रित करके भातखंडे ने अपनी पुस्तकें लिखीं। यही नही। जब उन्होंने लखनऊ में संगीत शिक्षण के लिए मैरिस कॉलेज की स्थापना की तब खानदानी संगीतजीवी मुस्लिम संगीतकारों को अध्यापन के लिए नियुक्त करना पड़ा। मैक्स कैट्ज ने 'सांस्थानिक सांप्रदायिकता'

पर लखनऊ में किए गए अपने शोध के आधार पर दर्शाया है कि किस तरह इस विद्यालय में, जिसे अब भातखंडे संगीत संस्थान के नाम से जाना जाता है और 2000 में जिसे विश्वविद्यालय का दर्जा भी प्राप्त है, मुस्लिम उस्तादों और छात्रों की संख्या में लगातार कमी आती गई। यह प्रक्रिया इस विद्यालय में ही नहीं, समूचे संगीत जगत में चली है जिसके कारण मुस्लिम उस्तादों से संगीत सीखने वाले शिक्षित हिन्दू मध्यवर्ग के संगीतकारों की व्यापक उपस्थिति के कारण खानदानी मुस्लिम संगीतकार लगातार हाशिये की तरफ ठेले जाते रहे। इन संगीत विद्यालयों के कारण संगीत का प्रचार-प्रसार तो हुआ लेकिन ये एक ही बड़ा कलाकार देने में असमर्थ रहे।

यह मान्यता भी फैलाई गई कि मुसलमानों के आगमन के कारण उत्तर भारत का संगीत दूषित हो गया लेकिन दक्षिण भारत का संगीत इससे बचा रहा। 1974 में प्रकाशित पुस्तक "मुसलमान और भारतीय संगीत" में आचार्य बृहस्पति ने इस धारणा का खंडन करते हुए सिद्ध किया कि किस तरह मुसलमानों के साथ आए ईरानी संगीत के साथ सम्पर्क में आने से भारतीय संगीत की श्रीवृद्धि हुई और उसमें परिवर्तन आए। मूर्छना-पद्धति के स्थान पर मेल-पद्धति आ गई और "संस्कृत के अनेक ग्रंथ मेल पद्धति के आधार पर लिखे गए"। भातखंडे ने भी मेल पद्धति के आधार पर ही रागों का वर्गीकरण और रूप-निर्धारण किया। उन्होंने तो अपने विचारों को मनवाने के लिए 'चतुर पंडित' के छद्म नाम से संस्कृत में ग्रन्थों की रचना भी कर डाली ताकि उन पर प्राचीनता की प्रामाणिकता का ठप्पा लग जाए।

अब तो कैथरीन बटलर स्कोफील्ड जैसे शोधकर्ताओं ने निर्णायक रूप से सिद्ध कर दिया है कि मुगल बादशाह औरंगजेब ने संगीत को देशनिकाला नहीं दिया था, केवल पकी उम्र होने पर दरबार में उसके इस्तेमाल पर पाबंदी लगा दी थई। लेकिन आचार्य वृहस्पति ने तो 1974 में प्रकाशित इस पुस्तक में ही स्पष्ट शब्दों में लिख दिया था कि "1667-1668 में औरंगजेब ने आदेश दिया कि गायक लोग दरबार में आयें, पर गाना न गायें। इस आदेश के कारण विशुद्ध राजनीतिक थे। इटालियन इतिहासकार मनुक्कि के अनुसार इस प्रतिबंध के बाद भी औरंगजेब बेगमों और शाहज़ादियों के मनोरंजन के लिए गायिकाओं और नर्तकियों की नियुक्ति करता था और अंत:पुर में गाना-बजाना होता था।" लेकिन सांप्रदायिक पूर्वाग्रहों के कारण औरंगजेब की संगीत-विरोधी कट्टर मुस्लिम शासक वाली छवि आज भी बनी हुई है जब कि आचार्य वृहस्पति उसके इस प्रकार के निर्णयों के पीछे विशुद्ध राजनीतिक कारण मानते हैं। इस सबके बावजूद अच्छी बात यह है कि इस सांप्रदायिक रुझानों के बावजूद अभी तक हिन्दुस्तानी संगीत जगत में साप्रदायिक सद्भाव बना हुआ है।

हालांकि इसके साथ ही यह भी सही है कि खानदानी घरानेदार मुस्लिम गायकों और वादकों की संख्या में लगातार कमी आती जा रही है। खयाल के कुछ घरानों में तो मुस्लिम गायक लगभग विलुप्त-से होते जा रहे हैं। सगीत सम्मेलनों के मंच पर अब ग्वालियर, आगरा और जयपुर जैसे घरानों समादृत मुस्लिम कलाकार ढूँढ़ने पर ही मिलेंगे। संगीत को समाज और राज्य की ओर से मिलने वाले आर्थिक-राजनीतिक समर्थन और संरक्षण की संरचनागत समस्याओं की भी इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका है। इस महत्वपूर्ण विषय पर आगे कभी चर्चा करेंगे।

– कुलदीप कुमार

प्रस्तुति : अशोक कुमार पाण्डेय Jantapaksh.blogspot.in

अब आर्थिक सहयोग देना हुआ और आसान

आर्थिक/रचनात्मक सहयोग करें

सहयोगकर्ताओं की सूची प्रतिमाह प्रकाशित होती है

SADINAMA

Current Account No. 03771100200213

PUNJAB AND SIND BANK

IFSE CODE : PSIB0000377

Bhawanipore Branch

Kolkata (West Bengal)

Phone No. For SMS

To Inform - 09231845289

PLZ SMS WITH YOUR FULL POSTAL ADDRESS

"अछूत कन्या"

सूर्य के प्रखर वेग से धरती जल रही है। हवा गर्मी से तप्त लू बन गयी है। तन से तर-तर पसीना बह रहा है। ग्रीष्म के ताप से जीव जन्तु व्याकुल तड़प रहे हैं। जनता को किसी भांति चैन नहीं मिलता है। वृक्षों की छाया में सकल जीव जगत आराम कर रहे हैं। पत्ता तक हिलता नहीं है। कच्चे उबड़-खाबड़ पथ से दो व्यक्ति आ रहे हैं।

हेमू : जल जीवन है, जल है जहान है। प्यासा सावन हूँ।
(सावन को देखकर)
अद्भुत, अद्भुत, अतिअद्भुत

सावन : रास्ता चलते चलते सपना देखता है, क्यों भाई ?

हेमू : विचित्र, अतिविचित्र

सावन : क्या हो गया है हेमू ? तुम इतने पागल से क्यों हुए हो ?

हेमू : आपने सुना नहीं है। तथागत बुद्ध दलितों को गले लगा कुशल क्षेम पूछ रहे हैं। उनके घरों से पका हुआ अन्न, पकवान खाते हैं, जल पीते हैं।

सावन : हमारे घरों से मांग रहे हैं ? आश्चर्य-आश्चर्य। साक्षात भगवान होगा।

हेमू : अपने चीवर (वस्त्र) से गरीबों के आँसू पोंछ रहे हैं। हिन्दू छाया से दूर भागता है। बुद्ध गले से लगाता है। इसीलिए तथागत बुद्ध भगवान कहलाता है।

सावन : साधारण मानव नहीं, महामानव हैं। वास्तव में अद्भुत हैं। शांति दूत हैं। आओ लौट चलें प्रकृति की ओर, बुद्ध की शरण में, जहाँ सत्य है। अहिंसा पथ है, प्रेम बंधुत्व है।

हेमू : वहाँ जाति पाति नहीं है। वर्ण भेद भाव नहीं, ढकोसले और आडम्बर नहीं है। कुरीतियाँ जल रही हैं। पशु बलि प्रथा मिट गयी। नर-नारी में भेद नहीं है।

सावन : धरती सूरज ताप से जल रही है वैसे ही हिन्दू जाति व्यवस्था, घृणित कर्मकाण्ड सामाजिक कुरीतियों से मेरा तन-मन जलता जा रहा है।

हेमू : मंगल शनीचर उपवास करते करते
शरीर ठठरी सा हुआ है।
कब किसी देवता ने
कुप्रथाओं से मुक्ति दिलाई।
कहाँ मानव समानता आयी ?
जल बिनु मीन प्यासी है।

सावन : जल लेने दूर बेटियाँ गयी हैं। भटकती होंगी। कच्चे कुएँ भी सूखने लगे हैं। हिन्दू लोग अपने तालाबों से जल लेने नहीं देते। कहते हैं, जल गंदा हो जाएगा। माटीसना दूषित जल हमलोग पी रहे हैं। वाह रे मानव ! यही वसुधैव कुटुम्बकं है।

हेमू : प्रकृति की मार हम झेल लेते हैं किन्तु आदमी की मार झेलना अब संभव नहीं है।

सावन : देको-देखो दूर दो संन्यासी जंगल पार कर उधर ही जा रहे हैं, जिधर बेटियाँ जल लेने गयी हैं।

हेमू : शिष्यों के धन को हड़पने वाले बहुत गुरु हैं। दुख दूर करने वाले तथागत बुद्ध जैसा कोई नहीं है।
चलो सावन तेजी से चलते हैं।

आनन्द : भगवन् इधर आ जाना सार्थक हुआ। पास से ही मधुर आवाज आ रही है। जल अवश्य मिलेगा।

तथागत : दुखों का कारण हमारी अज्ञानता है। तृष्णा दुख का कारण है हमें दोपहर में नहीं निकलना चाहिए था। धूप तेज है।

आनन्द : कुएँ से कन्याएँ जल निकाल रही हैं। (कुएँ के पास पहुँचकर)

तथागत : भवतु सब्ब मंगलम् 3 (शांत मुद्रा में दांया हाथ उठाकर)

शीतल : (सभी कन्याएं दूर पीछे हटती हुई)
बहनों ऐसा लगता है, धरती पर सूर्य चन्द्र एक साथ उतर आए हों।

वर्षा : मन मोह लिए, प्रकाश छा गया। दमकता चेहरा कितना सलोना है ?

ग्रीसम : क्या बहकी-बहकी बातें करती हो ? सवर्ण जातियाँ जल लेने से मना कर सकती है। जातिवाद व्यवस्था ने हमें मुर्दा बनाया है।

शीतल : जल प्रकृति द्वारा दिया गया अनुपम उपहार है। यही जीवन है।

वर्षा : कुत्ते जल पी सकते हैं। हमें क्यों पीने नहीं देता है समाज? यह समाज है या अहंकारी तांडवी, मानुष के वेष में अमानुष समाज है।

ग्रीसम : पहले देखो, तब कुछ सोचो-समझो! सभी के विचार एक समान नहीं होते हैं।

तथागत : कन्या! पास आओ। हमें जल दो! जल पिला दो।

शीतल : हम अछूत कन्या हैं। हमारी ओछी जाति है।

तथागत : कन्या! मैं जाति नहीं माँगा हूँ, जल माँग रहा हूँ। हमें जल पिलाओ। जाति स्वार्थी, दंभी आलसी और अज्ञानी आदमी ने बनाया है। हम सभी मनुष्य हैं। हमलोगों में कोई भेद नहीं है।

वर्षा : अछूतों के छूने से जल अपावन होगा? हम शूद्र तो गन्दगी से बने हैं न!

तथागत : कन्या! तुम सब पवित्र हो। सभी मनुष्य माँ की कोंख से एक समान जन्म लेते हैं। आप सभी शुद्ध अति शुद्ध हैं, शूद्र नहीं। आप सभी महान हैं।

आनन्द : कन्या! अब देरी मत करो। हमें जल पिलाओ। हमारे अधर सूख रहे हैं।

तथागत : कन्या! जल अमूल्य जीवन देता है। जल प्राणियों को जोड़ता है, जाति पाति वादी समाज को तोड़ते हैं। समाज को बदलना होगा।

शीतल : आपके पवित्र विचारों ने हमें जीने की शक्ति दिया है, आप महान हैं।

आनन्द : कन्याओं! तुम्हारे सामने भगवान तथागत बुद्ध स्वयं जल माँग रहे हैं। जल पिलाओ।

वर्षा : क्या भगवान स्वयं पधारे हैं? हमारा जीवन सफल हुआ। बहनों जल्दी आओ।

ग्रीसम : भगवन् जल पीजिए। घड़े से जल पिलाती हैं। तथागत बुद्ध और आनन्द सिर झुका हाथ के चुल्लू से जल पीते हैं।

आनन्द : (जल पीने के बाद)
तुम्हारे हाथों का जल बहुत ही मधुर है। अहा! कितना शीतल है? यही जीवन रस है।

तथागत : (वृक्षों की छाया में बैठते हैं) शीतल, वर्षा और ग्रीसम सिर झुका अभिवादन करती हैं।

नमो बुद्धाय-3

हेमू : (दौड़कर आता है) भगवन्! आपने हमें दर्शन दिया। हमारा जीवन धन्य हो गया। हमने घने वृक्षों की ओट से सब कुछ सुना है।

सावन : हम अधम को धम्म का उपदेश दिए, जगत उद्धारक हैं।

तथागत : (उठकर दोनों को गले लगाते हुए)
मनुष्य प्राणि जगत में श्रेष्ठ हैं। आप सभी उत्तम व्यक्ति हैं। अधम तो वह होता है जो मानव को मानव नहीं समझता। जहाँ जाति-वर्ग व भेद में बाँटता है। उसमें करुणा, दया, परमार्थ और नैतिकता का अभाव रहता है। आप तो बुद्ध विवेकशील हैं।

आनन्द : (घुटने के बल बैठते हुए) सभी को बैठने का संकेत देते हैं।
(हाथ जोड़)
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासंबुद्धस्स (तीन बार दुहराते हैं)

त्रिशरण

बुद्धं सरणं गच्छामि
धम्मं सरणं गच्छामि
संघं सरणं गच्छामि
(तीन बार दुहराते हुए) द्वितीयं, ततियापि

पांचशील

पाणातिपाता वेरमणि सिक्खापदं समादियामि।
आदिन्नादाना वेरमणि सिक्खापदं समादियामि।
कामेसु मिच्छाचारा वेरमणि सिक्खापदं समादियामि।
सुसावादा वेरमणि सिक्खापदं समदियामि
सुरामेरमयमज्ज पमादिट्ठाना वेरमणि सिक्खापदं समादियामि।
साधु – साधु – साधु

तथागत : भवतु सब्ब मंगलम् – (तीन बार), (पटाक्षेप)

–यदुनाथ सेउटा, सेउटा, आजमगढ़ (उ.प्र.)

गोइन्का पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

कमला गोइन्का फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री श्यामसुन्दर गोइन्का ने एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा बताया है कि दक्षिण भारत के हिन्दी साहित्यकारों के लिए निम्न पुरस्कारों की प्रविष्टियाँ मंगाई गयी हैं।

इक्कीस हजार राशि का **"बाबूलाल गोइन्का हिन्दी साहित्य पुरस्कार"** (दक्षिण भारत के साहित्यकारों द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रकाशित मूल हिन्दी पुस्तक के लिए)।

इक्कीस हजार राशि का **"पिताश्री गोपीराम गोइन्का हिन्दी-कन्नड अनुवाद पुरस्कार"** (सर्वश्रेष्ठ प्रकाशित हिन्दी से कन्नड या कन्नड से हिन्दी में अनुवादित पुस्तक के लिए)

इक्कीस हजार राशि का **"गीतादेवी गोइन्का हिन्दी-तेलुगु अनुवाद पुरस्कार"** (सर्वश्रेष्ठ प्रकाशित हिन्दी से तेलुगु या तेलुगु से हिन्दी में अनुवादित पुस्तक के लिए)

इक्कीस हजार राशि का **"बालकृष्ण गोइन्का अनुदित साहित्यक पुरस्कार"** (सर्वश्रेष्ठ प्रकाशित हिन्दी से तमिल या तमिल से हिन्दी में अनुवादित पुस्तक के लिए)

इक्कीस हजार राशि का **"सत्यनारायण गोइन्का अनुदित साहित्य पुरस्कार"** (सर्वश्रेष्ठ प्रकाशित हिन्दी से मलयालम या मलयालम से हिन्दी में अनुवादित पुस्तक के लिए)

उपरोक्त पुरस्कारों के लिए 2007-2017 के बीच की अवधि में प्रकाशित पुस्तक की चार-चार प्रतियां (अनुवादित कृति की चार प्रति तथा मूलकृति जिसका अनुवाद किया है उसकी चार प्रति) (प्रस्ताव-पत्र एवं पासपोर्ट आकार की दो फोटो बैंगलोर कार्यालय में 10 जनवरी 2018 तक भेजने का आग्रह किया है। "बाबूलाल गोइन्का हिन्दी साहित्य पुरस्कार" के लिए सिर्फ मूलकृति ही भेजनी होंगी। इस बार का पुरस्कार समारोह बैंगलोर में आयोजित किया जाएगा।)

प्रविष्टि-पत्र, नियमावली एवं अधिक जानकारी के लिए बेंगलूरू कार्यालय में सचिव कमलेश यादव से 99000202161 (Address- Kamala Goenka Foundation C/o. Go Go international Pvt. Ltd. - No. 6, KHG Industrial Area, 2nd Cross, Yelahanka New Town, Bangalore-560064. Tel : 080-32005502

कमलेश यादव , मो० : 9900020161

कार्यकारी सचिव, कमला गोइन्का फाउण्डेशन

आगे आएं हाथ बढ़ाएं

आपको पत्रिका अच्छी लगी हो तो

- नियमित पढ़ने के लिए – सदस्य बनें
- स्तरीय पत्रिका लगे – रचनाएं भेजें
- पुराने सदस्य हैं - नवीनीकरण कराए
- किसी गतिविधि को बढ़ाना है– हमें लिखें
- कोई असाध्य रोग है– कोलकाता आएं।
- कोई योजना है– हमें लिखें

गंगासागर/पुरी/दार्जिलिंग/सिक्किम/ उत्तर पूर्व जाना है– हमारे विशेषांक पढ़ें।

डॉ० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की याद में आयोजित कवि सम्मेलन और मुशायरा बजबज में पहली बार

गत रविवार को बजबज जूट मिल के गेट पर सर्वोदय पुस्तकालय समिति ने एक कवि सम्मेलन एवं मुशायरे का आयोजन किया। बंगाल के स्तर के इस आयोजन में अध्यक्षता कर रहे थे कुंवर वीर सिंह 'मार्तंड' तथा वरवी हाबखी (बाउड़िया)। सरस्वती वंदना के बाद कवि सम्मेलन में कविता पढ़ने वालों में थे मंजू बैज इशरत, भागीरथ कुर्मी, रार रस्ती, रामनाथ बेखबर, नंदलाल रौशन, सोहेल

खान सोहेल, मिनाक्षी सांगानेरिया, अमानुल्लाह सागर, कमरुद्दीन कमर, एम.के. सिंह 'एकलव्य', (बजबज) जितेन्द जितांशु उपस्थित थे। बलराम शर्मा (बजबज जूट मिल) कमलेश सिंह (समाजसेवी), पार्षद मो० मंसूर (कालीपुर), सुरेन्द्र सिंह, प्रेम प्रताप सिंह, तारकेश्वर सिंह, बहादुर सिंह, निजामुद्दीन अंसारी, जयनूल आबेदिन, मो० सलीम (चुन्नु), रामबालक सिंह, याहया खान, हरेन्द्र

सिंह, एहतशाम खान गाजीपुरी, मो० शफीक (कल्लू), मो० नसीम, राजनारायण, डॉ० ओ०पी०एल० श्रीवास्तव तथा अन्य। तीन घंटे तक चले जोरदार कार्यक्रम में लोगों ने भीड़ के कारण खड़े होकर मुशायरे का आनन्द लिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मो० लियाकत, गुड्डू, दिनेश अग्रवाल, पवन अग्रवाल, पुष्यमित्र शर्मा, मो० नसीम, अनुपम शर्मा, एहतशाम खान (कालीपुरी) सोनिया शर्मा, उमेश राय, छोटे लाल साव एवं शंकर प्रामाणिक ने भरपूर सहयोग दिया। बजबज जूट कम्पनी ने भी काफी सहयोग दिया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन जितेन्द्र जितांशु (जीतेन्द्रनाथ शर्मा) ने किया। यह जानकारी संस्था के सचिव सुरेन्द्र सिंह ने दी।

छात्राएं स्कूलों में बेहोश क्यों होती हैं ?

अक्सर सुनने में आता है कि उस लड़की को भूत ने पकड़ लिया या फिर फलां महिला के ऊपर भूत सवार हो गया। लेकिन यह सुनने में बहुत कम आता है कि किसी पुरुष के ऊपर भूत सवार हो गया हो। आखिर ऐसा क्यों होता है, पढ़िए यह महत्वपूर्ण लेख।

पिछले कुछ समय से पाठशालाओं में कुछ छात्राओं के कुछ समय के लिए बेहोश होने की घटनाएं प्रकाश में आती रही है। कभी किसी जिले से तो कभी दूसरे जिले से। रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव, बिलासपुर, सूरजपुर, कांकेर सहित मध्यप्रदेश के भी कुछ स्कूलों में ऐसी घटनाएं सामने आयी है, जिससे प्रभावित छात्राओं व स्कूलों में चिन्ता फैलने लगी। कुछ स्कूलों में भूतों का प्रकोप हो जाने की अफवाह फैली जिसमें आशंकित होकर कुछ पालकों ने डर के कारण अपनी बच्चियों को स्कूल जाने से मना कर दिया तो कुछ स्कूलों में तो बैगा बुलाकर झाड़-फूंक करायी गई। कुछ बच्चियों का स्वास्थ्य परीक्षण भी कराया गया पर बच्चियों के बेहोश हो जाने का क्रम कुछ अंतराल में जारी रहा, जिससे भ्रम व असमंजस की स्थिति पैदा होने लगी की आखिर क्यों हो जाती हैं बच्चियाँ स्कूलों में बेहोश, इस समस्या का निवारण कैसे हो।

स्कूल में बच्चियों के बेहोश हो जाने की घटना में से अनेक घटनाओं का परीक्षण किया, पीड़ित छात्राओं व उनके पालकों, शिक्षकों व ग्रामीणों से चर्चा भी की। कुछ ग्रामीण इन घटनाओं से काफी डरे हुए तथा भ्रम में थे। जब छात्राओं से पूछताछ की गई तब उन्होंने कहा उन्हें कुछ अस्पष्ट छाया या साया दिखता है जिससे वे डरकर बेहोश हो जाती हैं। कुछ ने सफेद कपड़े पहिने किसी महिला साया तो किसी छात्रा ने काले कपड़े पहिने भूत दिखने की बात बतायी।

कुछ मामलों में बेहोश होने के पूर्व बड़बड़ाने हाथ-पैर पटकने की बात भी सामने आयी जबकि उन बच्चियों के आस-पास बैठने वाली छात्राओं व छात्रों में से कुछ ने बताया कि वे सामने वाली बच्ची को असामान्य हरकत से डरकर बेहोश हो गई थी। कथित भूत/भूतनी न देखने की बात कही। सभी छात्राओं के चेहरे पर पानी छिड़कने के बाद आँखे खोलकर होश में आ जाती हैं, कुछ मामलों में ग्रामीण बच्चियों को अपने घर ले गये तथा कुछ स्कूलो में बैगाओं ने आकार झाड़ फूंक की पर जब यह घटना बार-बार घटी तो पाठकों व शिक्षकों में डर फैलने लगा।

स्कूलों में बेहोश हो जाने वाली घटनाओं में मैंने पाया कि सभी मामलों में कुछ बातें सामान्य है जैसे सभी घटनाएं ग्रामीण अंचल में स्थित शालाओं की है। पीड़ित बच्चियाँ गरीब, किसान, खेतिहर परिवार की सदस्य हैं। सभी बच्चियां स्कूल जाने के पहले व लौटने के बाद ही घर व खेत के काम में हांथ बंटाती हैं। उन सभी बच्चियों की पढ़ाई का स्तर औसत मध्यम स्तर से भी नीचे है। ऐसी बच्चियों के माता-पिता अशिक्षित या अल्प शिक्षित हैं जो बच्चियों को बढ़ाने व मार्गदर्शन दे माने में असमर्थ हैं, उनमें शिक्षा, स्वास्थ्य की जागरूकता की जबरदस्त कमी पायी गयी है। सभी घटनाओं में पीडित बच्चों की संख्या स्कूल में दर्ज बच्चियों से काफी कम है।

इस सम्बन्ध में एक खास पहलू पर भी हमें ध्यान रखने की आवश्यकता है कि स्कूलों में बेहोश होने की घटनाएं सिर्फ ग्रामीण अंचल के स्कूलों में ही क्यों होती हैं? आखिर बच्चियां ही क्यों बेहोश होती हैं, छात्र क्यों नहीं बेहोश होते, शहरों के स्कूलों, कान्वेन्ट स्कूलों में क्यों भूत नहीं आते ? आखिर ये कैसे कथित भूत-प्रेत हैं जो सिर्फ गरीब, कुपोषित, अशिक्षित परिवार की बच्चियों को ही गांव-गांव जाकर बेहोश कर रहे हैं।

विविधताओं से भरे इस समाज में विभिन्न जाति, धर्म सम्प्रदाय के नागरिक हैं जिनमें से कुछ सामान्य शिक्षित तो काफी लोग ऐसे भी हैं जिन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला। गरीबी व दूसरे कारणों से वे स्कूल का मुंह भी नहीं देख पाये। हमारा कृषि प्रधान देश है, गाँव में रहने वाले अधिकांश कृषक, मजदूर जिनकी संख्या अस्सी प्रतिशत से अधिक है उनके पास उपलब्ध शिक्षा, स्वास्थ्य की सुविधा में तथा हमारे देश के चंद बड़े शहरों में उपलब्ध स्वास्थ्य व शिक्षा के अवसरों में जमीन आसमान का फर्क है। अनेक स्थानों पर वे आज भी बैगाओं व ओझाओं की बातों का पूरा भरोसा करते हैं जो गांव में हमेशा उपलब्ध रहते हैं। बहुसंख्यक ग्रामीण गांव में जानवव के गुमने, बच्चे बीमार होने, गाय के दूध न देने, फसल व संक्रामक बीमारियों तक के परामर्श के लिए वे

सहज उपलब्ध बैगा के पास फूंकवाते, झड़वाने जाते हैं। जो हर प्रतिकूल परिस्थिति में भूत, प्रेत देवी-देवता, तंत्र-मंत्र में बांधा जाना आदि बताकर न केवल उन्हें गुमराह करता है बल्कि उनका शोषण भी करता है, अनेक मामलों में पंचायते बैगाओं का खुला विरोध नहीं कर पाती उनके फैसले में मूकदर्शक बनी रहती है।

हमने यह पाया है कि ऐसे मामलों में कुछ बच्चे ऐसी वस्तुओं जैसे सफेद साड़ी पहिनी औरत, लाल कपड़ा, काला कपड़ा वाला भूत के दिखने की बातें बताते हैं जो आस-पास यहाँ तक उनके अगल-बगल भी बैठे बच्चों को दिखाई नहीं देती। कुछ बच्चे ऐसे ही कुछ आवाजों के सुनने की बातें करते हैं जो बाकी लोगों को सुनाई नहीं देती। कुछ ग्रामीण व बच्चे इसे अन्य व्यक्ति का कारनामा तो कुछ इसे भूत-प्रेत, देवी-देवता का दिखना मानते हैं।

वास्तव में अनोखी वह रहस्यात्मक लगने वाली यह सब व्यक्तिगत अनुभव व बातें इन्द्रिय जनित भ्रम के अलावा कुछ नहीं है। मनोवैज्ञानिक इस प्रकार के अनुभव को व्यक्ति के व्यक्तित्त्व, मनोव्यवहार में आये बदलाव व मानसिक स्थिति में आये परिवर्तन के नजरिये से देखते हैं। वास्तव में हमारी इन्द्रियां जब भ्रम की अवस्था में होती है तब ऐसी घटनाएं कोई भी व्यक्ति महसूस कर सकता है।

उदाहरण के तौर पर स्टेशन में किसी दूसरे ट्रेन के चलने पर सामानांतर पटरी पर खड़ी किसी ट्रेन में स्वयं बैठे हैं कि चलने का आभास होना। किसी कड़वी या तीखी वस्तु के खाने के बाद सामान्य पानी में मिठास अनुभव करना, किसी की अन्दर दरवाजे के बंद होने की आवाज नहीं होने पर भी सुनाई पड़ना।

भूत-प्रेत दिखना, उनकी आवाजे सुननना भी इसी प्रकार का भ्रम है। कोई व्यक्ति किसी मामले या घटना के सम्बन्ध में बार-बार सुनने व विचार करता है तब उन तथ्यों को मस्तिष्क में ग्रहण करता है जो किसी रहस्यमयी आवाजों, चित्रों, वरदानों श्रापों के बारे में भी हो सकते हैं। शारीरिक अस्वस्थता, चोंटे, किस्से कहानियां, अफवाहें, मादक द्रव्य, कुछ दवाएं ऐसी भ्रम को बढ़ाने का काम करती हैं, मानसिक तनाव, अनिद्रा, चिंता भी ऐसे लक्षणों को जन्म दे सकता है।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि ग्रामीण अंचल की छात्राएं जिन विपरीत परिस्थितियों में रह रही हैं, पढ़ रही हैं उनकी स्थिति सुधारने की आवश्यकता है। उन्हें पढ़ाई करने का पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाता, उसे स्कूल आने के पहले से लेकर स्कूल जाने के बाद भी घर का काम करना पड़ता है। पढ़ाई समझ में न आने की कठिनाई, संसाधन की कमी, परीक्षा का डर उनके मस्तिष्क में दबाव बनाकर रखता है। किसी मनोवैज्ञानिक ने कहा है बच्चों में स्कूल का डर सबसे अधिक देखा गया है। कोई भी छोटा बच्चा जो घर से स्कूल जाना शुरू करता है तो प्रारम्भ में ही अपने आपको असुरक्षित महसूस करता है। सभी बच्चे एक जैसे नहीं होते, उनकी रूचियां, व्यवहार एक दूसरे से कुछ न कुछ अलग रहता है।

कुछ बच्चे स्कूल में अकेलापन भी महसूस करते हैं, कुछ बच्चे तो स्कूल न जाने के लिए पेट दर्द, सिर दर्द, तबियत खराब लगने के बहाने भी बनाते हैं। कभी होमवर्क न कर पाने व परीक्षा की तैयारी न होने से प्रताड़ना के डर से स्कूल न जाने व यहां तक नंबर कम पाने के भय से कभी परीक्षा में भी गेप ले लेते हैं। गांवों में तो हाल इससे भी खराब है, बच्चों में होने वाली इस शारीरिक मनोवैज्ञैनिक समस्याओं को सामाजिक, मानसिक समस्या मानकर निपटने की आवश्यकता है। बच्चों के लिए शैक्षणिक पाठ्यक्रम तैयार करते समय हमें इस बारे में भी सकारात्मक परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

– डॉ० दिनेश मिश्र. blog.scincitificworld.in

पत्रिकाएं मिलीं :-

द वेक
सम्पादिका : शकुन त्रिवेदी
वर्ष-12, अंक-143, सितम्बर-2017
पृष्ठ संख्या - 46
25A, चित्तरंजन एवेन्यू
कोलकाता-700 072
Ph. 09331039339
e-mail : shakuntrivedi@gmail.com
www.wakemagazine.blogspot.com

विश्व स्नेह समाज
सम्पादक : गोकुलेश्वर कु०द्विवेदी
वर्ष-16, अंक -11अगस्त 2017
पृष्ठ सं.- 36
सम्पादकीय पता
एल.आई.जी.-93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011,Ph. 09335155949
e-mail : vsneshsamaj@rediffmail.com

स्प्रिंग फेस्ट

स्प्रिंग फेस्ट, आईआईटी खड़गपुर का वार्षिक सामाजिक और सांस्कृतिक उत्सव है। स्प्रिंग फेस्ट एशिया में सबसे बड़े उत्सव में से एक है और पूरी तरह से छात्रों द्वारा आयोजित किया जाता है। स्प्रिंग फेस्ट में देशभर से 50000 से अधिक जनता अपने हुनर का प्रदर्शन करने आती है। भारत के सभी प्रमुख कॉलेजों से उत्साही प्रतिभागियों के लिए स्प्रिंग फेस्ट आनन्द और उल्लास का 3 दिवसीय उत्सव है। स्प्रिंग फेस्ट 2018 उसका 59 वाँ एडिशन है और 26 से 28 जनवरी, 2018 को आयोजित किया जा रहा है।

इस साल स्प्रिंग फेस्ट का नेशनवाइड प्रीलिम्स के प्रमुख चार नेनवाइड इवेंट्स–नुक्कड़, एस एफ आइडल, शेक अ लेग, टू फॉर टेंगो और शफल का आयोजन सफलतापूर्वक पूरे भारत में 7 शहरों (भोपाल, मुंबई, नई दिल्ली, पुणे, हैदराबाद, बेंगलुरु) में अक्टूबर को कराया गया। इस साल सभी स्थानों में रिकार्ड भागीदारी देखी गई और इसी के साथ प्रतिभागियों में दिसम्बर में आने वाले वाइल्डफायर (रॉक बैंड कम्पटीशन) की प्रीलिम्स के लिए काफी उत्साह है।

स्प्रिंग फेस्ट में 11 अलग-अलग श्रेणियों में 130+ से अधिक इवेंट्स शामिल है जिनका कुल इनाम राशि 30 लाख है और पूरे भारतवर्ष से सर्वश्रेष्ठ यहाँ भाग लेते हैं। ये इवेंट्स प्रतिभागियों के अन्दर की कला उभारने में कामयाब साबित हुई हैं और सर्वश्रेष्ठ के लिए सांस्कृतिक जंग का मैदान है। हमारी सामाजिक पहल – उमांग : Stand up to Stigma मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों का आगे बढ़ाने और सभी के लिए मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने का लक्ष्य है।

स्टार नाईट स्प्रिंग फेस्ट का मुख्य आकर्षण हैं। फरहान अख़्तर, अमित त्रिवेदी, शंकर-एहसान-लॉय, सलीम-सुलेमान, केके, रघु दीक्षित प्रोजेक्ट, यूफोरिया, पेंटाग्राम जैसे कलाकार इस उत्सव का शान बढ़ा चुके हैं। स्प्रिंग फेस्ट में डेड बाई अप्रैल जैसे अन्तर्राष्ट्रीय बैंड ने दर्शकों को हिलाकर रख दिया है।

स्प्रिंग फेस्ट, आईआईटी खड़गपुर फेसबुक पेज पर जाएं या हमारी वेबसाइट www.springfest.in पर लॉग ऑन करें।

यह जाकारी हमें **सगुन झुनझुनवाला,** 8017333344 एसोशियेट सदस्य से मिली।

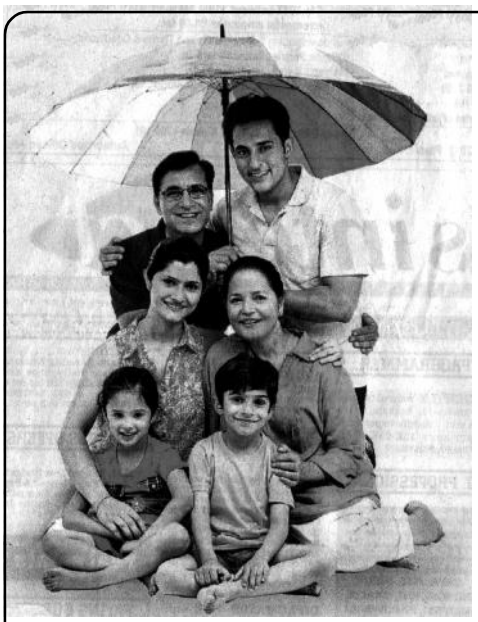

Ministry of Communications
Department of Posts

भारतीय डाक
India Post

We are Postal Life Insurance
Insuring Lives
Assuring Happiness

Postal Life Insurance (PLI), introduced in 1884, is one of the oldest life insurance schemes for the benefit of the Government and semi-Government employees. PLI today has grown significantly from a few hundred policies during initial days to over 4.7 million active policies

Policies under PLI

Whole Life Assurance (Suraksha) I Endowment Assurance (Santosh) I Convertivle Whole Life Assurance (Suvidha) I Anticipated Endowment Assurance (Sumangal) I Joint Life Assurance (Yugal Suraksha) Children Policy (Bal Jeevan Bima)

Benefits & Additional Features : Insurance limit upto 50 Lacs I Loan facility available I Exemption under Income Tax
Premium payment option : Online at www.indiapost.gov.in I At any Post Office in India I By deduction from salary

PLI- Low Premium. High Bonus. Lssey Behtar Kuchh Nahi

www.indiapost.gov.in I Toll Free : 1800 180 52 32 / 155232

PLI
डाक जीवन बीमा
POSTAL LIFE INSURANCE
SINCE 1884

पृष्ठ 1 का शेषांश

तकनीकी विकास तनी एहरो....

रौशनी फेंक सकता है– जिनको पहचानने की कोशिश में आप खुद पागल हो सकते हैं। भले ही मुझे गिनती सौ तक नहीं आती हो, मेरा मैथ्स कमजोर रहा हो, मैं आर्ट का ग्रेस-मार्क्स वाला स्टूडेंट रहा हूँ, और बड़ी बात यह हो कि औसत (आम नहीं लिखा है, कृपया ध्यान दें) आदमी की आंखें सैकड़ों हजार रंग को ही विभाजित रूप में पहचान पाने की क्षमता रखती हों, पर उससे क्या ? न केवल यह स्मार्टबल्ब करोड़ों रंगों की रौशनी फेंक सकता है जो केवल स्मार्ट लैंसों व उपकरणों को ही समझ आ सकता है, बल्कि यह मौसम, समय और आपके मूड के मुताबिक भी रौशनी फेंक सकता है। जैसे कि रात को 11 बजे आपके सोते समय यह ऐसी रौशनी फेंक सकता है जिससे आपको और अधिक गहरी, रीलैक्सिंग नींद आती है और फलस्वरूप जब आप सुबह उठते हैं तो अपेक्षाकृत अधिक तरोताजा, सुखद और प्रसन्न महसूस करते हैं। इसी के लालच में मैंने यह बल्ब खरीद कर अपने शयनकक्ष में लगाया था।

इस स्मार्टबल्ब की सहायता से मैं कोई सप्ताह भर ही भली नींद ले भी नहीं पाया था, कि एक अच्छी भली रुमानी रात को दो बजे मेरी नींद खुल गई। मेरे स्मार्टबल्ब में से विचित्र तरीके के, अजीबोगरीब रंगों की रौशनी निकल रही थी, जिसने मेरी शांति भरी नींद में खलल डाल दिया था, और मैं जाग गया था। पसीने से तरबतर। जैसेकि कोई बुरा ख्वाब देख लिया हो। मगर बात कुछ दूसरी थी। स्मार्टबल्ब से निकल रही अजीबोगरीब रौशनी मुझे पागल बना दे रही थी। मैंने तत्काल उसे बन्द करने के लिए अपने मोबाइल में स्थापित ऐप्प को खोलना चाहा, तो देखा कि उसमें तो पहले ही नोटिफिकेशन आ रहा था। नोटिफिकेशन में किसी हैकर का संदेश बोल्ड अक्षरों में आ रहा था– आपका स्मार्टबल्ब हैक कर लिया गया है। अब इस स्मार्टबल्ब से निकलने वाली रौशनी आपको पंद्रह मिनट के भीतर पागल बना देगी, अत: जल्द से जल्द छुटकारा पाने के लिए तुरंत ही इस खाता– #$@°%%^& नम्बर पर $#@$$% बिटक्वाइन जमा करें। अब आप बिटक्वाइन क्या है यह मत पूछिए। तकनीकी विकास के पागलपन की पराकाष्ठा है यह। न रुपया न पैसा न सिक्का न नोट और है यह बड़ी रकम। बस गिनते रहिए और दूसरी मुद्राओं के उलट यह गिरता नहीं, बस उठता जाता है उठता जाता है– शायद किसी दिन फटने के लिए।

तो, तकनीकी विकास के पागलपन ने मुझे ही एक अच्छी भली अर्धरात्रि को पागल बना दिया था। मैंने अपने इस पागलपन और जुनून में शयनकक्ष के कोने में रखा डंडा उठाया जो पत्नीजी छिपकलियों और कॉकरोचों को भगाने के लिए रखा करती हैं। पता नहीं तकनीकी विकास छिपकलियों और कॉकरोचों को भगाने के मामले में पीछे क्यों और कहाँ रह गया जो अभी भी डंडों का सहारा लेना होता है– शायद पुरुषवादी अनुसंधानकर्ताओं की साजिशें हों – स्त्रियों को अभी भी वश में रखने हेतु, बहरहाल अभी तो यह मेरे लिए फायदेमंद ही रही। मैंने उस डंडे से अपने स्मार्टबल्ब को दे मारा। मगर ये क्या ? वो एंटी शैटर, एंटी डिस्ट्रक्टिव मटीरियल का बना था, शैटरप्रूफ था, डस्ट और वाटरप्रूफ था। लाइफटाइम गारंटी वाला था। उसे न टूटना था, न टूटा और मुझे नीम पागल बनाने वाली रौशनी फेंके जा रहा था, जिसकी फ्रीक्वेंसी और बढ़ती जा रही थी।

आप कहेंगे कि मैं उस स्मार्टबल्ब का स्विच क्यों ऑफ नहीं कर रहा था ? तो, बतादूं कि अभी मैं पूरा पागल नहीं हुआ था, और मुझे पता था कि यह स्मार्टबल्ब 72 घंटे का पॉवरकट तो झेल ही सकता था, यह सेल्फपावर्ड भी था – दिन में वातावरण से प्राप्त रौशनी से सेल्फ चार्ज भी हो जाता था। तो इससे पहले कि मुझ पर पूरी तरह पागलपन सवार होता, मैंने उस स्मार्टबल्ब को कंबल में लपेटा, सॉकेट से बाहर निकाला और कूड़ेदान में डालकर बंद कर दिया।

प्लास्टिक के अल्प पारदर्शी कूड़ेदान के भीतर से उस स्मार्टबल्ब की पगलाई रौशनी धीमी-धीमी बाहर आ रही थी और अब वो बड़ी भली और अच्छी लग रही थी– सम्मोहक, मेस्मेराइजिंग, हिप्नोटिक टाइप। मैंने जल्द ही अपनी नजरें फेर लीं, कूड़ेदान को घर से बाहर रखा और वापस शयन कक्ष में आकर सोने की असफल कोशिश करने लगा।

– raviratlami.blogspot.in

विज्ञापन दरें :

पूरे देश के लिए एक समान

साईज		रु०
पूरा पेज	-	8000
आधा पेज	-	5000
एक चौथाई	-	3000
1 कॉ. × 1 से.मी.		250

पाठक नामा

(1)

सम्पादकजी, नमस्कार !

एक लम्बे अरसे से आपकी ओर से किसी प्रकार की हलचल/प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं हुई। यद्यपि मैंने यहाँ से अपने सृजन के एक/दो अंश भेजे थे तथापि आपकी ओर से कोई भी उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। शायद मेरे पत्र आप तक पहुँच नहीं सके। अस्तु एक बार पुन: एक बहुत महत्वपूर्ण निबन्ध आपकी ओर भेज रहा हूँ। इसी के साथ एक कविता भी भेज रहा हूँ। आशा है कि आप इन्हें यथोचित स्थान देंगे।

साभार

–डॉ प्रमोद 'पुष्कर' (M) : 7581052771

(2)

बन्धुवर जितेन्द्र जी, नमस्कार !

शब्द ही घाव देते हैं, शब्द मरहम भी होते हैं,
भावों की आधार शिला, शब्द प्यार पुष्प होते हैं।

लगभग दो वर्ष से निजी व्यस्तताओं के कारण संवाद स्थापित न कर सका और कुछ संयोग ऐसा भी रहा कि इस बीच 'सदीनामा' भी नहीं प्राप्त हुआ।

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ रहते हुए 'सदीनामा' का प्रकाशन निरन्तर जारी रखें होंगे।

हार्दिक शुभकामनायें !

विद्यालक्ष्मी निकेतन,
53-महालक्ष्मी एनक्लेव, जानसठ रोड,
मुजफ्फरनगर-251001 (उत्तर प्रदेश)
सम्पर्क : 8265821800, 0131-2604950
E-mail : kirtivardhan@gmail.com;
kirtivardhan. blogspot.com

(3)

सम्पादक- सदीनामा

आपने जो पत्र लिखा उसके लिए धन्यवाद और आभार प्रकट करता हूँ।

मैंने जो कुछ भी लिखा उसके पीछे दो व्यक्तियों का प्रोत्साहन रहा है। एक जी.आर. नरसिंहाराव और दूसरे प्रो० (डॉ०) कृष्णकुमार गोस्वामीजी। मेरा काव्य संग्रह 'मैं तो तुम्हारी रागिनी हूँ' 2000 में प्रकाशित हुई। उसके पश्चात 'दास्ताने औरत जो मेरी आत्म कथा है, 2001 में और महालका चन्दाबाई 2016 और भुवन मोहिनी 2017 और 'उजाला' गोस्वामीजी प्रकाशित करवा रहे हैं।

आशा करता हूँ कि मेरी रचनाएँ आपको पसन्द आयेगी। आपकी प्रतिक्रिया जानने का इच्छुक हूँ।

प्रभाकर 'ललन'

विज्ञापन

सोच के इजाफे की पत्रिका मुश्किल हो रहा है इतनी प्रतियां छापना अठारह वर्ष तक नियमित आप तक पहुँचाने का अनवरत काम

यह पत्रिका विज्ञापन विहीन पत्रिका लग रही होगी। असल में हमें विज्ञापन नहीं मिलते। इसका कारण हमारी कोई विज्ञापन नीति नहीं। कुछ विज्ञापन आ भी जाते हैं। हम जब भी विज्ञापन की परख/सत्यता की बात करते हैं, हमें विज्ञापन नहीं मिलते। दिक्कत ये आ रही है कि सदस्यों को नियमित भेजते समय जितनी कापियाँ भेजनी पड़ रही है उतने की पूंजी में दिक्कत आ रही है अतएव हम अपनी हाल सुधार के लिए अगले एक वर्ष तक नई सदस्यता बंद कर रहे हैं।

क्षमा सहित

जितेन्द्र जितांशु
जितेन्द्र जितांशु
सम्पादक : सदीनामा

ISSN : 2454-2121
R.N.I. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regn. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16

1 से 30 नवम्बर, 2017
कुल पेज : 20

मूल्य : 5.00
सदीनामा
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

दीपावली व छठ पूजा की हार्दिक शुभकामनाएँ :–

Amarnath Mishra & Co.

Head Office
50, Burtalla Street, Kolkata-700 007, Phone : 033 2270 2809, 22719629
Mobile : +919331030502/9831829418, E-mail : mishra. essential @gmail.com

Shop
207F/1, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007

Aroma Essential
31Burtalla Street, Kolkata - 700 007

Amarnath Mishra & Associates
207F/1, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007

Rose Factory
Barigawa & Jhinwar/Dist. Eath (U.P.), Hasayan, Dist. Aligarh (U.P.)

Keora Factory
Agararam & Kunmunna, Post. Chattarpur, Dist.Ganjam (Odisha)

With best compliments from :

GOLDEN Machinex Corporation

Regd. Office : 194/3, G.T. Road (North) Salkia
Howrah-711 106, West Bengal
Ph : 2655-7582, 2655-7835
Fax : (91) (033) 2655-7835/2211-5035

Showroom : 7, Ganesh Chandra Avenue
Kolkata- 700013
Ph. : 2237-2835, 2237-8896

Website : www. goldenmachinery.com

E-mail : mail@goldenmachinery.com

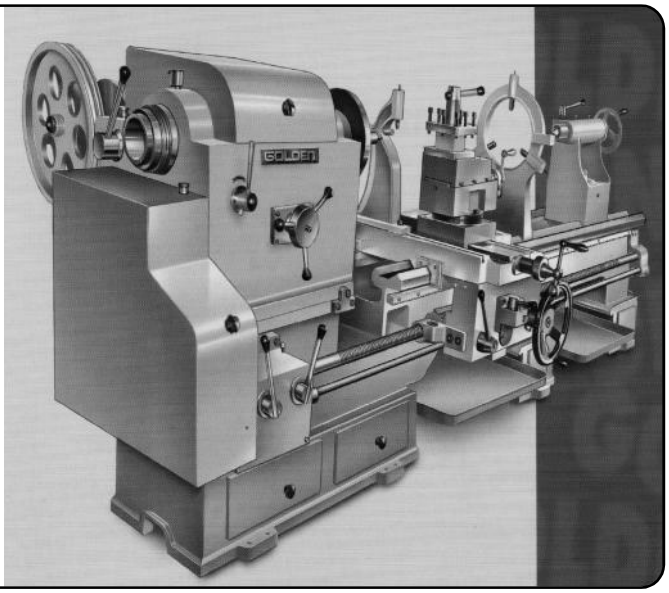

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी सोनिया शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37 ए, बैंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-700137, 24 Pgs. (S), W.B. India से प्रकाशित ।
संपादक : जितेन्द्र जितांशु, ☎ : 9231845289, E-mail : jjitanshu@yahoo.com,R.N.I. No. WBHIN/2000/1974